ये 2 सांप इसी महीने घर के इन कोनों में दुबक जाते हैं

इंसानों की अकाल मृत्यु में सांपों का बहुत बड़ा योगदान होता है. आईसीएमआर की एक रिसर्च पेपर में बताया गया है कि भारत में पिछले साल 1.20 लाख लोगों को सांपों ने काटा जिनमें से 50 से 60 हजार लोगों की मौत हो गई. इन मौतों में से अधिकांश को रोका जा सकता है. अगर हम सही से चौकन्ना रहें और कुछ चीजों की निगरानी करते रहे तो बहुत हद तक सांपों को खुद से दूर रखा जा सकता है. आमतौर पर सांप ठंड में नहीं दिखते लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वे ठंड में लोगों को नहीं काटते. सर्दी में भी वे इतने ही लोगों को काटते हैं. जब सर्दी आती है तो सांप गर्म जगहों की तलाश करते हैं. चूहों का बिल इनके लिए मुफीद जगह होती है. इसके अलावा वे घर का ऐसा कोना खोजते हैं जहां उन्हें गर्माहट महसूस हो और उसे अपना शिकार भी आसानी से मिलता रहे. ऐसे में 2 किस्म के सांपों के लिए घर का कुछ कोना बेहद सुरक्षित होता है. लेकिन समय पाते ही ये सांप लोगों को डस सकते हैं. इसलिए आपको यह जानना जरूरी है कि ये सांप घर के किस कोने में रहते हैं. भारत में सबसे ज्यादा कोबरा या काला नाग के काटने से लोगों की मौत होती है. काला नाग को पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में गेंहुअन सांप भी कहा जाता है. बुंदेलखंड और मध्य भारत के कुछ हिस्सों में इसे खर्पर कहा जाता है. कुछ जगहों पर इसे गोखुर भी कहा जाता है. चाहे इसे कुछ भी कहा जाए लेकिन ब्लैक कोबरा बेहद खतरनाक होता है और तेजी से अपना जहर इंसान पर छोड़ देता है. सर्दी का मौसम आने के बाद जैसे ही ठंड बढ़ती है यह गर्म जगहों की तलाश में रहता है. चूहों का बिल इसका पसंदीदा जगह होता है लेकिन आजकल चूहों का बिल कम मिलता है. इसलिए यह घर का यह ऐसा कोना ढूंढता है कि वहां गर्म है. कोबरा के बाद उत्तर भारत में करैत के काटने से सबसे ज्यादा लोगों की मौत होती है. करैत बेहद जहरीला सांप है. करैत अक्सर खंडहरों में पाया जाता है. घरों के आसपास परित्यक्त जगहें जहां किसी की आवाजाही नहीं होती है, आमतौर पर वहां ये छुपे होते हैं. सर्दी के दिनों में ये ऐसी जगहों की तलाश तेज कर देते हैं. करैत और कोबरा दोनों ऐसे सांप हैं जो घर के आसपास डेरा जमा सकते हैं. चिंता की बात यह है कि जब भी मौका मिलता है यह किसी को भी नहीं बख्शते. न ही इसका वार खाली जाता है. जब तक यह जिंदा है यह किसी को भी अपना शिकार बना सकता है. छत के कूड़ा-करकट वाले कोने में-सर्दी में आजकल सांपों का सबसे पसंदीदा जगह



छत पर होता है. गांवों में छत का एक कोना जरूर ऐसा होता है जहां पुराने समानों का जमावड़ा लगा होता है. इसमें कई चीजें गर्माहट वाली होती है. कोबरा या करैत इन चीजों में अपनी गर्माहट खोज लेते हैं और आसानी से इसमें दुबक जाते हैं. खास बात यह है कि छत के उपर लोगों की आवाजाही भी बहुत कम होती है, इसलिए यह आसानी से दिन में अपना शिकार भी कर लेते हैं. ऐसे में छत को कोने में कभी भी किसी पुराने सामान को न रखें. छत को हमेशा साफ रखें. लकड़ी का ढेर या मलबा- घर में जरूर कोई ऐसा कोना होता है जहां लकड़ियों के ढेर लगे होते हैं या कोई मलबा पड़ा होता है. यहां भी सांप अपना आशियाना तलाश कर लेते हैं. यह महीना सांप इसी जुगत में रहता है कि कब कोई गर्मी वाली जगह मिल जाए. ऐसे में घरों के बाहर या बाड़े में रखी सूखी लकड़ियों के ढेर, कंडे, उपलों आदि में अपनी जगह तलाश लेते हैं. खास बात यह है कि यहां कीड़े-मकौड़े भी बहुत आ जाते हैं तो इसे अपना भोजन भी आसानी से मिल जाता है. इसलिए सर्दी के मौसम में कहीं भी इन चीजों का ढेर न लगाएं. जहां भी लकड़ी रखें उसके आर-पार को देखते रहें. ईंट-पत्थरों के मलबे में-घरों में हमेशा कुछ न कुछ कंस्ट्रक्शन का काम होता रहता है. गांवों में ऐसा अक्सर होता है. लोग ईंट का ढेर लगा देते हैं और वह सालों तक यूं ही पड़ा रहता है लेकिन कोबरा और करैत के लिए यह बेहद खास जगह है. सर्दी के मौसम में खासतौर पर ऐसी जगह ये तलाश लेते हैं. इसलिए ईंट का ढेर हमेशा घर से दूर रखें. यदि घर के आसपास है तो वहां सफाई रखें. सफाई रखने पर अन्य जीव नहीं आ पाएंगे जोउसका शिकार नहीं बनेंगे. ईंट-पत्थरों के मलबे में-घरों में हमेशा कुछ न कुछ कंस्ट्रक्शन का काम होता रहता है. गांवों में ऐसा अक्सर होता है. लोग ईंट का ढेर लगा देते हैं और वह सालों तक यूं ही पड़ा रहता है लेकिन कोबरा और करैत के लिए यह बेहद खास जगह है. सर्दी के मौसम में ऐसी जगह ये तलाश लेते हैं. इसलिए ईंट का ढेर हमेशा घर से दूर रखें. यदि घर के आसपास है तो वहां सफाई रखें. सफाई रखने पर अन्य जीव नहीं आ पाएंगे जोउसका शिकार नहीं बनेंगे. नालियां, सेप्टिक टैंक के आसपास - जहां नालियों का कंस्ट्रक्शन होता है उसके साइड में गर्माहट रहती है और वहां गुप्त जगह बन जाती है. इसलिए सांप इन जगहों की तलाश में रहते हैं. वहीं पानी की निकासी वाली पुरानी नालियों के कोने और सेप्टिक टैंक के आसपास भी गर्म स्थान सांपों को आसानी से मिल जाता है. यहां लोगों की आवाजाही भी कम होती है. यहां उन्हें छुपे रहने के लिए नमी और कीट-पतंगे आसानी से मिल जाते हैं जिन्हें वे अपना भोजन बनाते हैं. इसलिए इन जगहों की हमेशा सफाई करते रहें और इन जगहों पर हमेशा निगाहें दौड़ाते रहें. इस तरह यदि आप चौकन्ना रहेंगे तो सांपों का बसेरा आपके घर के आसपास नहीं होगा.

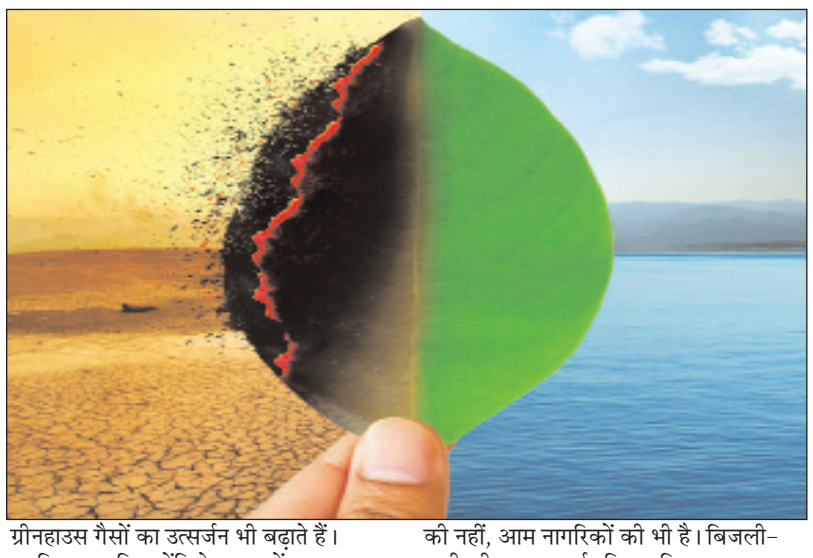
रामलला के नाम पर लॉन्च हुई बेहद लग्जरी घड़ी



स्विट्जरलैंड की जानी-मानी प्रीमियम वॉच कंपनी फ्रैंक मुलर ने एक बेहद खास और अनोखी घड़ी बाजार में उतारी है। कंपनी ने इसे अपनी वैन्गार्ड सीरीज के तहत राम लला लिमिटेड एडिशन नाम दिया है। इस लग्जरी घड़ी की कीमत 31.25 लाख रुपये रखी गई है और इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह सीधे तौर पर अयोध्या के राम मंदिर में विराजमान भगवान राम के बाल स्वरूप को समर्पित है। इस महंगी टाइमपीस का मुख्य आकर्षण इसका अद्भुत 3डी डायल है। इस डायल के ठीक बीच में रामलला की बहुत ही बारीक और सुंदर आकृति उकेरी गई है। कंपनी के अनुसार, इस खास डिजाइन को बनाने में एडवांस लेजर तकनीक का सहारा लिया गया है। इस बारीकी को निखारने और डायल को पूरी तरह तैयार करने में कारीगरों को पूरे 30 घंटे का समय लगा। घड़ी के डायल के साथ-साथ इसकी बाहरी बनावट भी पूरी तरह से राजसी है। इसका केस 18 कैरेट रोज गोल्ड के एक ठोस ब्लॉक से तराश कर बनाया गया है। अगर इसके साइज की बात करें, तो इस केस की चौड़ाई 41 मिलीमीटर और लंबाई 49.95 मिलीमीटर है। यह परफेक्ट साइज और सोने की चमक इसे कलाई पर एक बेहद प्रीमियम और आकर्षक लुक देती है। चूंकि यह एक लिमिटेड एडिशन सीरीज है, इसलिए कंपनी ने इसका बड़े पैमाने पर उत्पादन नहीं किया है। फ्रैंक मुलर ने इस रामलला मॉडल की पूरी दुनिया के लिए केवल 108 घड़ियां ही बनाई हैं। यानी विश्वभर में केवल 108 लोग ही ऐसे होंगे जिनके पास यह खास घड़ी खरीदने और पहनने का मौका होगा। ठेकुआ गेहूं के आटे से बनता है, जिसके लिए गेहूं को पिसवाया जाता है और उससे पहले मिल की धुलाई की जाती है, ताकि प्रसाद की शुद्धता बनी रहे। गेहूं के आटे में गुड़ और देसी घी मिलाया जाता है। इसका स्वाद बढ़ाने के लिए इसमें सौंफ और घिसा हुआ नारियल भी मिलाया जाता है। लकड़ी के सांचे पर इस पर डिजाइन बनाया जाता है और इसे चूल्हे पर धीमी आंच पर तलकर बनाया जाता है।

मौसम का बदलता मिजाज चिंता का विषय

जलवायु परिवर्तन से निपटने में विज्ञान की भूमिका निर्णायक है। मौसम पूर्वानुमान, उपग्रह आधारित निगरानी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जलवायु माडलिंग और आपदा पूर्व चेतावनी प्रणालियों से जोखिम कम किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, अत्यधिक वर्षा या चक्रवात की आशंका का पहले पता चलने पर प्रशासन लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाकर जान-माल का नुकसान कम हो सकता है। इसी तरह कार्बन कैप्चर, ग्रीन हाइड्रोजन, उन्नत बैटरी और ऊर्जा दक्षता से जुड़ी तकनीकें उत्सर्जन घटाने में मददगार हो सकती हैं। हालांकि इनका लाभ तभी मिलेगा जब ये सस्ती, सुलभ और पर्यावरण के अनुकूल हों। जलवायु परिवर्तन का असर तेजी से बढ़ते शहरों में भी दिखाई दे रहा है। कंक्रीट के बढ़ते निर्माण, घटते हरित क्षेत्र, वाहनों का धुआं और ऊर्जा की अधिक खपत शहरों का तापमान बढ़ा रहे हैं। इससे निपटने के लिए पौधारोपण, हरित क्षेत्र का विस्तार, तालाबों और जलाशयों का संरक्षण, वर्षा जल संचयन, ऊर्जा दक्ष भवनों और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना जरूरी है। बढ़ती गर्मी के कारण एयर कंडीशनर की मांग बढ़ रही है, लेकिन पारंपरिक शीतलन उपकरण बिजली की खपत के साथ कुछ मामलों में शक्तिशाली



ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन भी बढ़ाते हैं। इसलिए प्राकृतिक वेंटिलेशन, छतों पर हरियाली, ऊर्जा दक्ष उपकरणों और पर्यावरण अनुकूल शीतलन तकनीकों को बढ़ावा देना होगा। जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध लड़ाई में जलवायु अनुकूल शहरों और टिकाऊ भवनों के विकास के साथ प्रकृति आधारित समाधानों को भी प्राथमिकता देनी होगी, क्योंकि वायु प्रदूषण का दायरा निरंतर बढ़ रहा है। जलवायु परिवर्तन से निपटने की जिम्मेदारी केवल सरकारों और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की नहीं, आम नागरिकों की भी है। बिजली-पानी की बचत, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग, प्लास्टिक का कम इस्तेमाल, कचरे का पृथक्करण और पेड़-पौधों का संरक्षण जैसे कदम बड़ा बदलाव ला सकते हैं। जरूरत से ज्यादा वस्तुओं का उपयोग, खाद्य पदार्थों की बर्बादी और ऊर्जा की अनावश्यक खपत भी पर्यावरण पर दबाव बढ़ाती है। इसलिए जलवायु अनुकूल जीवनशैली को सामाजिक आंदोलन बनाने की जरूरत है। धरती के पास संसाधन सीमित हैं, लेकिन मानव की आवश्यकताएं और आकांक्षाएं लगातार बढ़ रही हैं। अब जरूरत इसकी है कि विकास का रास्ता प्रकृति के विनाश से होकर न गुजरे।

स्कूल की शरारतों से लेकर बचपन के सपनों तक...

इस बाल दिवस पर कलाकारों ने यादों के सफर पर निकाला कदम

बचपन को अक्सर बेफिक्र दिनों, मासूम शरारतों, बड़े सपनों और ऐसी दोस्तियों के लिए याद किया जाता है, जो हमेशा हमारे साथ बनी रहती हैं। कक्षा के सबसे शरारती छात्र होने और मासूम शरारतों के लिए पकड़े जाने से लेकर भविष्य के सपने देखने और कम उम्र में जिम्मेदारियाँ संभालने तक, हर किसी के बचपन में ऐसी कहानियाँ होती हैं, जिन्हें दोबारा याद करना खास होता है। इस बाल दिवस पर सोनी सब के कलाकार तोरल रासपुत्रा, दीक्षा जोशी और नितिन बाबू यादों के उसी सफर पर निकलते हैं और उन पलों को साझा कर रहे हैं, जिन्होंने उन्हें आज का इंसान बनाया, उन यादों के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें वे फिर से जीना चाहेंगे और उन सलाहों को साझा कर रहे हैं, जो वे आज अपने बचपन के स्वयं को देना चाहेंगे। हस्तिनापुर के वीर में कुंती की भूमिका निभा रहीं तोरल रासपुत्रा ने कहा,



बचपन में मेरा हमेशा सपना था कि मैं एक अभिनेत्री बनूँ। मुझे याद है कि मैं स्क्रीन पर प्रस्तुतियाँ देखती थी और कल्पना करती थी कि दूसरी तरफ होना कैसा होगा, जहाँ अलग-अलग किरदारों को जीवंत किया जाता है। यह एक ऐसा सपना था, जो मेरे साथ उम्र बढ़ने के साथ भी बना रहा और आज जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो मैं खुद को सौभाग्यशाली मानती हूँ.पुष्पा इम्पॉसिबल में दीप्ति की भूमिका निभा रहीं दीक्षा जोशी ने कहा, जब मैं स्कूल के दिनों के बारे में सोचती हूँ, तो सबसे पहले मुझे अपने दोस्तों के साथ बिताया गया मजेदार समय याद आता है और यह भी कि कैसे छोटी-सी बात भी किसी बड़े रोमांच में बदल जाती थी। मैं निश्चित रूप से उन लोगों में से थी, जिन्हें अपने सहपाठियों के साथ खुलकर हँसना-मुस्कुराना बहुत पसंद था और हमारे आसपास हमेशा कोई न कोई शरारत चलती रहती थी। पुष्पा इम्पॉसिबल में चिराग की भूमिका निभा रहे नितिन बाबू ने कहा, मुझे लगता है कि बड़े होने की प्रक्रिया आप को बहुत कुछ सिखाती है, खासकर तब जब आपको कम उम्र में ही जिम्मेदारियाँ संभालनी पड़ें। मुझे याद है कि मुझे छोटे-छोटे काम सौंपे जाते थे और उन्हें संभालने के लिए मुझ पर किया गया भरोसा मुझे काफी बड़ा होने का एहसास कराता था। उस समय वे चीजें भले ही साधारण लगती हों, लेकिन आज पीछे मुड़कर देखने पर मुझे एहसास होता है कि उन्होंने मुझे जिम्मेदार और आत्मनिर्भर बनना कितना सिखाया। यदि मैं अपने बचपन में दोबारा लौट पाता, तो मैं उन दिनों को फिर से जीना पसंद करता, लेकिन इस बार थोड़ी कम गंभीरता और कहीं ज्यादा खेल-कूद के साथ। मैं अपने छोटे वाले रूप से कहता कि जिम्मेदार होना अच्छी बात है, लेकिन मस्ती के लिए समय निकालना और बचपन का आनंद लेना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

सोते समय भी काम करता है इंसानी



दिमाग

दिनभर काम करने के बाद जब हम रात में बिस्तर पर जाते हैं तो धीरे-धीरे शरीर आराम की स्थिति में पहुंचने लगता है. आंखें बंद होती हैं, आसपास की आवाजों पर ध्यान कम होने लगता है और हम नींद की दुनिया में चले जाते हैं। आमतौर पर लोगों को लगता है कि सोने के बाद शरीर के साथ-साथ दिमाग भी काम करना बंद कर देता है. लेकिन असल में ऐसा बिल्कुल नहीं होता.जब हम सो रहे होते हैं, तब भी हमारा दिमाग कई जरूरी कामों में व्यस्त रहता है। वह दिनभर की जानकारियों को व्यवस्थित करता है, यादों को मजबूत बनाने में मदद करता है और शरीर की रिकवरी से जुड़ी प्रक्रियाओं को नियंत्रित करता है. यही वजह है कि अच्छी नींद केवल थकान दूर करने के लिए नहीं, बल्कि दिमाग को स्वस्थ रखने के लिए भी जरूरी होती है। कई रिसर्च में बताया गया है कि नींद के दौरान इंसानी दिमाग पूरी तरह बंद नहीं होता। इसकी गतिविधियां जागने के समय से अलग जरूर हो जाती हैं, लेकिन दिमाग लगातार एक्टिव रहता है। नींद के दौरान दिमाग अलग-अलग चरणों से गुजरता है. इस दौरान ब्रेनवेव्स, सांस लेने की गति, दिल की धड़कन और शरीर के तापमान में बदलाव आते हैं. ये सभी प्रक्रियाएं शरीर को आराम देने और अगले दिन के लिए तैयार करने में मदद करती हैं। वैज्ञानिकों ने नींद को मुख्य रूप से दो हिस्सों में बांटा है। पहला नॉन-रैपिड आई मूवमेंट और दूसरा रैपिड आई मूवमेंट स्लीप. में तीन चरण होते हैं. पहले चरण में व्यक्ति जागने और सोने के बीच की स्थिति में रहता है। दूसरे चरण में नींद थोड़ी गहरी होने लगती है और दिल की धड़कन धीमी हो जाती है। तीसरे चरण को गहरी नींद कहा जाता है। इस दौरान शरीर की मरम्मत और मांसपेशियों की रिकवरी जैसी प्रक्रियाएं होती हैं। रेम स्लीप में दिमाग काफी एक्टिव हो जाता है। आंखें बंद होने के बावजूद तेजी से घूमती हैं और आमतौर पर इसी दौरान सबसे जीवंत सपने आते हैं। शरीर की मांसपेशियां अस्थायी रूप से इनएक्टिव रहती हैं, ताकि व्यक्ति सपनों में होने वाली गतिविधियों को वास्तव में करने न लगे।

एक्टिंग के लिए पहले जैसी भूख नहीं रही-राधिका आप्टे

मुझे बाद में अहसास हुआ कि मैं खुद पर इतना दबाव क्यों डाल रही हूं, क्योंकि ये सब करना बहुत मुश्किल होता है। अब जाकर मेरा शरीर वापस पहले जैसा होना शुरू हुआ है। मेरा हार्मोनल लेवल, पीरियड सब वापस नॉर्मल होना शुरू हुआ है। सोचिए, उसमें दो साल लगे, तो मदरहुड बहुत मुश्किल होता है।

इंडस्ट्री और ओटीटी पर बेधड़क काम करने वाली एक्ट्रेस राधिका आप्टे अपने कई प्रोजेक्ट्स को लेकर चर्चे में रहती हैं। एक्ट्रेस ने अपनी फिल्मों और पर्सनल लाइफ को लेकर कई सारी बातें कीं। बदलापुर, मांझी- द माउंटेन मैन, अंधाधुन, सेक्रेड गेम्स, लस्ट स्टोरीज जैसी अपनी हर फिल्म/सीरीज में अलग छाप छोड़ने वाली अदाकारा राधिका आप्टे का कहना है कि उनमें ऐक्टिंग को लेकर अब पहले जैसी भूख नहीं रही। अपनी नैचरल ऐक्टिंग के लिए मशहूर राधिका जल्द ही महिला प्रधान गैंगस्टर सीरीज अक्का में दमदार रोल में दिखेंगी। इसी सिलसिले में नवभारत टाइम्स से खास बातचीत के दौरान उन्होंने कहा कि उन्हें ऐक्टिंग अब भी पसंद है, लेकिन उसे लेकर अब वो आग नहीं महसूस होती है। इंडस्ट्री में करीब दो दशक बिता चुकीं राधिका आप्टे से जब हमने इतने लंबे समय तक ऐक्टिंग करते रहने के लिए जरूरी भूख को लेकर सवाल किया, तो वह हंसकर बोलीं, मेरी तो खत्म हो गई है। मुझमें ऐसी भूख बची नहीं है और वो अच्छी चीज है क्योंकि उस हंगर (भूख) के चलते बहुत कुछ कर चुकी हूं, जो अब मुझे नहीं करना है। अब ना बोलना आसान हो गया है। हालांकि, ऐसा नहीं है कि मुझे ऐक्टिंग पसंद नहीं है। मुझे अब भी अपने प्रफेशन से प्यार है। मुझे ऐक्टिंग में मजा आता है, पर पहले क्या था कि मुझे हर हाल में ये करना है और ज्यादातर समय फ्री में काम कर रहे हैं। लोगों की मदद कर रहे हैं क्योंकि ये था कि इनके साथ या ये काम करने के लिए कुछ भी करूंगी



तो वो चीज अब खत्म हो गई है। चूंकि, हमारे पेशे इतनी अनिश्चितता है कि आज काम है, कल काम नहीं है। आपको खुद को रेलवेंट भी रखना है, ऊंचाई पर भी चढ़ना है, तो लगता है कि अगर मैंने उनको ना कर दिया तो क्या होगा? अगर मैंने मना कर दिया और वो फिल्म हिट हो गई तो मेरा क्या होगा? ये सब सोच अब खत्म हो गई है, जो बड़ी आजादी वाली बात है। राधिका दो साल पहले ही मां बनी हैं, तो क्या काम को लेकर बदली इस सोच में मदरहुड का भी हाथ है? इस पर उन्होंने कहा, मदरहुड के बाद निश्चित तौर पर प्राथमिकताएं बदल जाती है। पहले मैं सोचती थी कि ये बहुत ही क्लीशे (घिसी-पिटी) लाइन है और मेरे साथ ऐसा बिल्कुल नहीं होगा। इसलिए, जब मैं मां बनी तो मेरी सोच ये थी कि मुझे अगले हफ्ते काम पर जाना है। मगर अभी मुझे ऐसा लगता है कि अगर मैं दोबारा उस वक्त में लौट सकूं या कभी अगर मेरा दूसरा बेबी हुआ तो मैं ब्रेक लूंगी, क्योंकि यह वक्त है बहुत जल्दी चला जाता है। फिर सब कुछ करने की कोशिश में बहुत बहुत ज्यादा थक जाते हैं। फिर सब कुछ करके आप किसको क्या साबित करना चाहते हैं? अक्का दो ताकतवर महिलाओं की जंग की कहानी है। राधिका ने खुद बतौर महिला कब सबसे ज्यादा ताकतवर या कमजोर महसूस किया? यह पूछने पर उन्होंने कहा, जब भी मैं अपने लिए खड़ी हो पाई हूं और ना बोल पाई हूं, मुझे सबसे ज्यादा ताकत महसूस हुई है और जब भी मैं वो नहीं कर पाई हूं और मेरा यकीन कीजिए, ऐसा बहुत हुआ है। बहुत बार आप हां कर देते हैं, पर घर जाकर नींद नहीं आती और उस वक्त मैं बहुत कमजोर महसूस करती हूं। खुद के लिए खड़े हो पाना आसान नहीं होता है तो जब आप यह कर लेते हैं, बहुत सशक्त महसूस करते हैं। सीरीज में राधिका के साथ साउथ स्टार कीर्ति सुरेश भी मुख्य किरदार में हैं। उनके साथ काम करने के अनुभव पर उन्होंने बताया, कीर्ति बहुत ही जेंटल और सॉफ्ट इंसान है, जबकि शो में उनका किरदार उसके बिल्कुल उल्टा है। वह बहुत ही मेहनती हैं। जैसे हिंदी भाषी नहीं होने के बावजूद उन्होंने अपनी हिंदी पर बहुत मेहनत की, जो मैं शायद कभी नहीं कर पाऊंगी। अगर मुझसे कोई तमिल फिल्म के लिए इतनी मेहनत करने को कहे तो मैं तो कहूंगी कि बाबा, आप किसी और को कास्ट कर लो।

लोग पॉपकॉर्न की जगह ठेकुआ बांट रहे हैं-तमन्ना भाटिया

तमन्ना भाटिया इन दिनों ई फिल्म द वन फोर्स ऑफ द फारेस्ट को लेकर चर्चा में हैं। उन्होंने कहा, मैंने देखा कि लोग थिएटर्स के बाहर चप्पल उतारकर अंदर जा रहे हैं, पॉपकॉर्न की जगह ठेकुआ बांट रहे हैं। दिवाली और दूसरे त्योहार तो स्क्रीन पर खूब दिखे हैं, लेकिन छठ महापर्व को इस तरह पहले कभी नहीं देखा। तमन्ना भाटिया इंडस्ट्री की उन एक्ट्रेसेस में से हैं, जिन्हें बॉलिवुड का लकी मस्कट कहा जाता है। वे अपने निर्माता-निर्देशकों के लिए काफी लकी मानी जाती हैं। इंडस्ट्री में तकरीबन 20 साल बिता चुकी तमन्ना साउथ के बाद बॉलिवुड की भी चाहती अभिनेत्री बन गई हैं। इन दिनों वे चर्चा में यहीं अपनी नई फिल्म द वन फोर्स ऑफ द फारेस्ट से। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई कर रही है और तमन्ना की भूमिका को भी खूब सराहना मिली है। उनसे एक खास बातचीत। बॉक्स ऑफिस पर अपनी फिल्म को मिली कामयाबी को लेकर तमन्ना बहुत खुश हैं। वे कहती हैं, इंटरनेट पर मैंने देखा कि लोग थिएटर्स के बाहर चप्पल उतारकर अंदर जा रहे हैं, पॉपकॉर्न की जगह ठेकुआ बांट रहे हैं। बिहार का ये खूबसूरत कल्चर हमने पहली बार इतने बड़े पर्दे पर देखा है। दिवाली और दूसरे त्योहार तो स्क्रीन पर खूब दिखे हैं, लेकिन छठ महापर्व को इस तरह पहले कभी नहीं देखा। मुझे लगता है कि हमारी संस्कृति और परंपराएं ही वो पल हैं, जो दर्शकों को जोड़ रह हैं। फोकलोर को सिर्फ रेगुलर तरीके से दिखाने के बजाय उसे बड़े स्टाइल में, खासकर फैमिली ऑडियंस के लिए पेश किया गया है। आज हमें एक ही जॉनर की नहीं, बल्कि मल्टी-जॉनर फिल्मों की जरूरत है, जो अलग-अलग तरह के दर्शकों को एक साथ एंगेज करें और जिनका कोर हमारी संस्कृति से जुड़ा हो। इस फिल्म में छठी मैया के गाने और छठ महापर्व को जिस तरह कहानी का हिस्सा बनाया गया है, उसने दर्शकों को बहुत आकर्षित किया।

